वर्ष : 12 अंक : 4 अक्टूबर–दिसम्बर 2017

पन्त प्रसार सन्देश

(प्रसार शिक्षा निदेशालय की त्रैमासिक समाचार पत्रिका)
गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पन्तनगर–263 145, ऊधमसिंह नगर, उत्तराखण्ड

संरक्षकः डा. ए.के. मिश्रा, कुलपति
मुख्य सम्पादकः डा. वाई. पी. एस. डबास, निदेशक प्रसार शिक्षा
सम्पादकः ई. अनिल कुमार, सह निदेशक (कृषि अभियन्त्रण) एवं डा. बी.एस. कार्की, प्राध्यापक (सस्य)

कुलपति संदेश

'पन्त प्रसार सन्देश पत्रिका का अक्टूबर–दिसम्बर 2017 (अंक 12.4) आपके हाथों में है। वैज्ञानिकों द्वारा किए गये शोध परिणामों को जन–जन तक पहुंचाने में प्रसार शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान है। आज किसानों की आय में वृद्धि एवं उनके समग्र उन्नयन पर गहन चिन्तन किया जा रहा है, यह तभी सम्भव है जब हम खेती की लागत को कम करते हुए उत्पादन में वृद्धि कर सकें। इसके लिए हमें किसानों को उत्कृष्ट तकनीकी ज्ञान उपलब्ध कराने के साथ–साथ उनके उत्पादों का उचित मूल्य दिलाने हेतु यथोचित प्रयास करने होंगे। इस क्रम में मेरा पूर्ण विश्वास है कि हमारे कृषि विज्ञान केन्द्र विभिन्न प्रसार गतिविधियों जैसे– प्रशिक्षणों, अग्रिम पंक्ति प्रदर्शनों, प्रक्षेत्र दिवसों, किसान मेलों व प्रदर्शनियों इत्यादि द्वारा प्रदेश के सुदूरवर्ती क्षेत्रों के कृषक एवं कृषक महिलाओं को वैज्ञानिक जानकारी उपलब्ध कराकर फसलों की उत्पादकता एवं उत्पादन बढ़ाने एवं युवकों को तकनीकी ज्ञान प्रदान कर स्वरोजगार से जोड़ने में सफल होंगे। जैसा कि विदित ही है कि खेती–बाड़ी में जलवायु का महत्वपूर्ण योगदान है किन्तु विगत कुछ वर्षों से हमें जलवायु में कुछ ऐसे परिवर्तनों का अनुभव हो रहा है जो खेती–बाड़ी एवं जीव व अन्य वनस्पतियों के लिए सर्वथा प्रतिकूल है। यदि समय रहते जलवायु परिवर्तन के इन प्रतिकूल प्रभावों का निराकरण न किया गया तो आगामी वर्षों में कई सारे कृषि सम्बन्धित दुष्परिणाम सामने आने अवश्यंभावी है जो बढ़ती हुई आबादी के परिदृश्य में अत्यन्त घातक सिद्ध होंगे। इस सन्दर्भ में कृषि प्रसार एवं सलाहकार सेवाओं की भूमिका और भी महत्वपूर्ण होगी। कृषि परामर्श सेवा के माध्यम से कृषकों को समय–समय पर इस सम्बन्ध में प्रशिक्षण एवं जानकारी देना आवश्यक है। मौसम पूर्वानुमान के आधार पर उपयुक्त प्रजातियों, कृषि तकनीकों, सिंचाई की मात्रा एवं क्रम में परिवर्तन तथा अन्य सस्य उत्पादन तकनीकों के उपयोग की सही जानकारी किसानों तक पहुँचाकर जलवायु परिवर्तन के दुष्परिणामों को काफी हद तक कम किया जा सकता है। नवीनतम कृषि तकनीकों को जन–जन तक पहुँचाने में किसान मेला एवं कृषि प्रदर्शनियों का महत्वपूर्ण योगदान है। मुझे यह बताते हुए अत्यन्त हर्ष हो रहा है कि विगत त्रैमास में प्रसार शिक्षा निदेशालय के तत्वावधान में 102वाँ अखिल भारतीय किसान मेला एवं कृषि उद्योग प्रदर्शनी का भव्य रूप से आयोजन किया गया, जिसमें कृषि विकास में कार्यरत राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के सैकड़ों प्रतिष्ठानों तथा हजारों किसानों की सक्रिय प्रतिभागिता ने हमें अत्यन्त प्रेरित किया है। इस पत्रिका द्वारा पन्तनगर विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा की गतिविधियों को आप तक पहुँचाकर हमें अधिक प्रसन्नता हो रही है। मुझे विश्वास है कि यह पत्रिका प्रसार कार्यो को और अधिक गतिशील बनाने में सहभागी होगी।

शुभकामनाएँ।

(ए.के. मिश्रा)
कुलपति

102वाँ अखिल भारतीय किसान मेला एवं कृषि उद्योग प्रदर्शनी का सफल आयोजन

प्रसार शिक्षा निदेशालय के तत्त्वावधान में 'कृषि कुंभ' के नाम से विख्यात 102वाँ अखिल भारतीय किसान मेला एवं कृषि उद्योग प्रदर्शनी का भव्य आयोजन अक्टूबर 06–09, 2017 को विश्वविद्यालय परिसर में किया गया। मेले का उद्घाटन दिनांक 06 अक्टूबर, 2017 को प्रातः 11 बजे मुख्य अतिथि, श्री त्रिवेन्द्र सिंह रावत जी, माननीय मुख्यमंत्री उत्तराखण्ड द्वारा कुलपति डा. ए.के. मिश्रा, स्थानीय विधायक श्री राजेश शुक्ला, विधायक श्री राजकुमार ठुकराल एवं मा. प्रबन्ध परिषद सदस्य श्री राजेन्द्रपाल सिंह तथा अन्य गणमान्य जनप्रतिनिधियों, अधिष्ठातागण, निदेशकगण, वैज्ञानिकों, कर्मचारियों, छात्रों एवं कृषकों की उपस्थिति में गाँधी मैदान में किया गया। मेले का उद्घाटन करने के बाद अतिथियों एवं अन्य गणमान्य व्यक्तियों द्वारा मेला प्रांगण में लगे स्टॉलों का भ्रमण एवं अवलोकन किया गया। तत्पश्चात् गाँधी सभागार में आयोजित उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि, श्री त्रिवेन्द्र सिंह रावत ने अपने सम्बोधन में कहा कि विश्वविद्यालय में बीज और पादपों की 280 प्रजातियां विकसित हो चुकी हैं। पन्तनगर के वैज्ञानिक नई इबारत लिख रहे हैं। हरित क्रान्ति का जनक हमारे राज्य के लिए प्रतिष्ठा का संस्थान है। हिमाचल प्रदेश से उत्तराखण्ड राज्य के किसानों की आय की दस वर्षों की तुलना करते हुए उन्होंने प्रदेश के किसानों की आय बढ़ाने के लिए विभिन्न उपाय किए जाने की आवश्यकता बताई। उन्होंने कहा कि प्रदेश में खेती का दायरा सात लाख हैक्टेयर है, जो प्रदेश की आबादी के हिसाब से बहुत कम है। पन्तनगर विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों को पर्वतीय क्षेत्रों की ओर भी देखना चाहिए। किसान को तकनीक का इस्तेमाल करने की जरूरत है। उन्होंने वैज्ञानिकों से नई तकनीकों को किसानों तक पहुंचाने के साथ ही उनके साथ संवाद स्थापित करने को कहा। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने छह

किसान मेले का उद्घाटन करते हुए मा. मुख्यमंत्री

किताबों का विमोचन भी किया जिनमें रबी फसलों की उन्नत खेती, पन्त प्रसार संदेश, तकनीकी प्लांट कल्चर एवं टिश्यू कल्चर, मशरूम की खेती को लेकर तैयार किये गये आडियों कार्यक्रम शामिल हैं।

कुलपति डा. ए.के. मिश्रा ने अपने सम्बोधन में कहा कि कृषि लागत में कमी और कृषि उत्पादकता में वृद्धि के जरिए किसानों की आय दोगुना करने के लिए विश्वविद्यालय प्रयासरत है। साल में दो बार लगाये जाने वाले किसान मेले में हजारों की संख्या में किसान भाग लेते हैं। किसान विभिन्न प्रदेशों के अलावा नेपाल से भी आते हैं। उन्होनें कृषि आधारित व्यवसाय जैसे मधुमक्खी पालन, मशरूम उत्पादन, मुर्गी पालन, पशुपालन, मछली पालन इत्यादि को अपनाये जाने की भी वकालत की। समारोह के प्रारम्भ में निदेशक प्रसार शिक्षा, डा. वाई.पी.एस. डबास द्वारा सभी सम्मानित अतिथियों का स्वागत एवं समारोह के अन्त में कार्यवाहक निदेशक शोध, डा. जयंत सिंह ने सभी सम्मानित अतिथियों का धन्यवाद किया।

मेले में विश्वविद्यालय के विभिन्न महाविद्यालयों के साथ–साथ राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के फर्मों ने स्टॉल लगाकर कृषि से सम्बन्धित उत्पादों एवं तकनीकों का प्रदर्शन किया। मेले में अनुसंधान केन्द्रों पर परीक्षणों/प्रदर्शनों का अवलोकन, रबी की फसलों के नवीनतम प्रजातियों के बीज व मिनीकिट की बिक्री, शाक–भाजी एवं फलों के उन्नत बीजों व पौधों की बिक्री, किसानोपयोगी उन्नत तकनीकों की प्रदर्शनी, आधुनिक कृषि यंत्रों की प्रदर्शनी, विश्वविद्यालय प्रकाशनों की रियायती दर पर बिक्री का आयोजन किया गया। वैज्ञानिकों द्वारा प्रत्येक दिवस अपरान्ह विशेष व्याख्यानमाला तथा कृषकों की समस्याओं के निराकरण हेतु कृषक गोष्ठी का आयोजन किया गया। कृषकों के मनोरंजन हेतु प्रत्येक दिवस सायंकाल सांस्कृतिक कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया। मेले के दौरान किसानों की विशेष रूचि विश्वविद्यालय की शोध इकाईयों द्वारा उत्पादित गुणवत्तायुक्त बीजों के क्रय करने में रही। इसके अलावा मेले में विभिन्न राष्ट्रीयकृत बैंकों एवं बीमा कम्पनियों के स्टॉलों द्वारा कृषकों हेतु ऋण एवं अन्य उपयोगी योजनाओं के बारे में जानकारी दी गई।

स्टॉल का निरीक्षण करते हुए मा. मुख्यमंत्री

अखिल भारतीय किसान मेला एवं कृषि उद्योग प्रदर्शनी का समापन 09 अक्टूबर, 2017 को मुख्य अथिति माननीय कृषि मंत्री, श्री सुबोध उनियाल जी द्वारा अपरान्ह 3:00 बजे किया गया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि किसान की आय दोगुनी करने के लिए पन्तनगर विश्वविद्यालय, कृषि विभाग और उद्यान विभाग को मिलकर काम करना होगा। विश्वविद्यालय अपनी आय के संसाधन बढ़ाएं और राज्य के किसानों को बचाने के लिए नेतृत्व करें। समन्वित खेती के साथ–साथ समन्वित तंत्र की भी जरूरत है ताकि उच्च गुणवत्तायुक्त बीजों, अच्छे उर्वरकों, कृषि रसायनों की उपलब्धता के साथ–साथ भंडारण और विपणन की व्यवस्था हो सके। उन्होंने शोध को किसानों के खेतों तक पहुंचाने के लिए कृषि विभाग को विश्वविद्यालय से तालमेल बनाने की सलाह दी। उन्होंने टी.डी.सी. की हालत सुधारने के लिए कुलपति को सलाह दी कि वह इस संस्था को पन्तनगर विश्वविद्यालय के अधीन कर लें। उन्होंने कृषि विभाग और उद्यान विभाग को निर्देश दिये कि दोनों संस्थान अपनी जरूरतों का बीज टी.डी.सी. से ही खरीदें।

समापन समारोह को सम्बोधित करते हुए मा. कृषि मंत्री

कुलपति डा. ए.के. मिश्रा ने कहा कि उत्तराखण्ड से भी छोटा देश हालैंड आधुनिक तकनीकें अपनाकर विश्व का दूसरा बड़ा निर्यातक देश बन गया है। हालैंड विभिन्न कृषि उत्पादों का विश्व औसत के मुकाबले कई गुना उत्पादन कर रहा है। पानी का 90 प्रतिशत तक कम उपयोग और रासायनिक उर्वरकों का न्यूनतम प्रयोग कर रहा है। उन्होंने पर्वतीय क्षेत्रों में कीवी, अदरक, हल्दी, पुष्प, जड़ी–बूटी का उत्पादन बढ़ाने की बात कही ताकि जंगली जानवरों से होने वाले नुकसान को कम किया जा सके।

समापन समारोह में निदेशक प्रसार शिक्षा, डा. वाई.पी.एस. डबास द्वारा मेले का संक्षिप्त प्रतिवेदन प्रस्तुत करते हुए बताया गया कि किसान मेले में 208 बड़ी एवं 99 छोटी फर्मों सहित कुल 307 फर्मों द्वारा स्टॉल लगाकर विविध उत्पादों एवं तकनीकों का प्रदर्शन किया गया। किसान मेले में पंजीकृत कृषकों सहित कृषक महिलाओं, विद्यार्थियों एवं अन्य आगन्तुकों द्वारा प्रतिभाग किया गया। इस चार दिवसीय मेले में विश्वविद्यालय के विभिन्न शोध केन्द्रों के स्टालों द्वारा लगभग रू. 70 लाख से अधिक मूल्य के बीज/पौधों की बिक्री की गई तथा निजी फर्मों के स्टालों द्वारा कृषि निवेशों जैसे बीज, उर्वरकों, रसायनों इत्यादि की बिक्री की गई। इस किसान मेले में उत्तराखण्ड के साथ–साथ देश के कई राज्यों से भी बड़ी संख्या में किसानों ने प्रतिभाग किया। समारोह के अन्त में निदेशक शोध ने सभी सम्मानित अतिथियों का धन्यवाद किया।

मेले में प्रगतिशील कृषक सम्मानित

अखिल भारतीय किसान मेला एवं कृषि उद्योग प्रदर्शनी के उद्घाटन अवसर पर विश्वविद्यालय के कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा चयनित प्रगतिशील कृषकों को कृषि के क्षेत्र में अभिनव परिवर्तन लाने एवं उल्लेखनीय सफलता प्राप्त करने के लिए अतिथियों द्वारा प्रतीक चिन्ह एवं प्रमाण–पत्र देकर सम्मानित किया गया। सम्मानित किये गये कृषक श्री प्रदीप रस्तोगी, ग्राम–भोगपुर (ऊधमसिंहनगर); श्री सुनील कुमार, ग्राम–थिथकी कवादपुर (हरिद्वार); श्री नरेन्द्र गोबाड़ी, ग्राम–भटेरी (पिथौरागढ़); श्री खुशाल सिंह, ग्राम–मुंदोली (चमोली); श्री नरेन्द्र सिंह मेहरा, ग्राम–देवली मल्ला (नैनीताल); श्री प्रवीन कुमार, ग्राम–शाहपुर–कल्यानपुर (देहरादून); श्री महेश चन्द्र काण्डपाल, ग्राम–कोटयूड़ा (अल्मोड़ा); श्री पंकज तिवारी, ग्राम–अतखण्डी (चम्पावत) एवं सुश्री रंजना रावत, ग्राम–भीरी ऊखीमठ (रूद्रप्रयाग) थे।

प्रगतिशील कृषक को सम्मानित करते हुए मुख्य अतिथि

मेले में प्रतिभाग किये फर्मों के प्रतिनिधि सम्मानित

कृषि उद्योग प्रदर्शनी के पुरस्कार वितरण समारोह में अतिथियों द्वारा सर्वोत्तम स्टॉल का पुरस्कार मै. ए.एच. एसोसिएट्स, दानपुर–रूद्रपुर (ऊधमसिंहनगर) को तथा सर्वोत्तम प्रदर्शन का पुरस्कार मै. कोरटैक एग्री एण्ड बायो सॉल्यूशन प्रा. लि.–नई दिल्ली को प्रदान किया गया। इसके अतिरिक्त ऑटोमोबाइल्स एवं ट्रैक्टर समूह में मै. इन्टरनेशनल ट्रैक्टर्स लि.–होशियारपुर (पंजाब), मै. तानिश ट्रैक्टर्स (टैफे)–रूद्रपुर (ऊधमसिंहनगर); पावर टिलर्स, फार्म मशीनरी एवं टूल समूह में मै. जग्गी एग्रीकल्चर वर्क्स–कबूलपुर (पंजाब), मै. पंजाब मोटर्स–रूद्रपुर (ऊधमसिंहनगर), मै. बी.के.टी.–मुम्बई (महाराष्ट्र); इरिगेशन, पम्प, मोटर्स एवं कन्ट्रोल समूह में मै. वी.पी.एस. एग्रोटैक लि.–रूद्रपुर (ऊधमसिंहनगर); फर्टिलाइजर्स समूह में मै. यारा फर्टिलाइजर इण्डिया प्रा. लि.–मेरठ (उत्तर प्रदेश); माइक्रो न्यूट्रिएंट एवं बॉयो–फर्टिलाइजर समूह में मै. इन्टरनेशनल पैनाका लि.–नई दिल्ली; पेस्टिसाइडस् एवं बॉयो–पेस्टिसाइडस् समूह में मै. रैलीस इण्डिया लि.– लखनऊ; एग्रो फोरेस्ट्री, नर्सरी, हर्बल एवं मेडिसिनल प्लान्ट्स् समूह में मै. सैंचुरी पल्प एण्ड पेपर–लालकुआँ (नैनीताल), मै. ग्रीनप्लाई इन्डस्ट्रीज–रूद्रपुर (ऊधमसिंहनगर); वेटेरिनरी मेडिसिन्स एवं फीड सप्लीमेन्ट्स समूह में मै. वीरबैक एनिमल हैल्थ इण्डिया प्रा. लि.–मुम्बई, मै. मैनकाइन्ड फार्मा लि.–दिल्ली, मै. एम.एस.डी. एनीमल हैल्थ–पुणे (महाराष्ट्र); एनीमल

पुरस्कार प्रदान करते हुए मा. कृषि मंत्री

फीड्स एवं फीड सप्लीमेन्ट्स समूह में मै. कारगिल इण्डिया प्रा. लि.–सोनीपत (हरियाणा); बैंकिंग, हाऊसिंग एवं इन्श्योरेंस समूह में एस.बी.आई.–पन्तनगर (ऊधमसिंहनगर), बैंक ऑफ बड़ौदा–रूद्रपुर (ऊधमसिंहनगर); सीड समूह में मै. नुजीविदू सीड्स लि.–हैदराबाद (आंध्र प्रदेश), मै. जागौर एग्रो सीड्स प्रा. लि.–हल्द्वानी (नैनीताल) एवं मै. बॉयर सीड्स प्रा. लि. –लखनऊ के स्टॉल को प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

कृषि विज्ञान केन्द्रों की गतिविधियाँ

कृषि विज्ञान केन्द्र, ढकरानी (देहरादून)

- कृषि विज्ञान केन्द्र, ढकरानी द्वारा जनपद देहरादून के विभिन्न क्षेत्रों में तथा केन्द्र पर कुल 26 प्रशिक्षणों का आयोजन किया गया, जिसमें 567 किसान लाभान्वित हुये। इन प्रशिक्षणों का आयोजन फसल उत्पादन, सब्जी उत्पादन, फल उत्पादन, नाशीजीव प्रबन्धन, पोषण प्रबन्धन, मृदा परीक्षण, पशु पालन, चारा उत्पादन, कुक्कुट पालन, बकरी पालन, गृह वाटिका विषयों पर किया गया। इसके अतिरिक्त जनपद के प्रसार कर्मियों हेतु भी 3 प्रशिक्षण आयोजित कर 23 कर्मियों को कृषि एवं इससे सम्बन्धित क्षेत्रों में हो रहे तकनीकी विकास से जागरूक किया गया। कृषि विज्ञान केन्द्र, ढकरानी में कृषकों के 37 भ्रमण आयोजित किये गये, जिसमें 300 किसानों ने प्रतिभाग किया। केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा कुल 23 कृषक संगोष्ठी में प्रतिभाग कर 2750 किसानों को अपने–अपने विषयों से सम्बन्धित तकनीकी जानकारी दी गयी। महिला मण्डल दल की 4 बैठक आयोजित कर 46 कृषक महिलाओं को कृषि पर आधारित उद्यमों से लाभान्वित किया गया। केन्द्र द्वारा दो प्रदर्शनी में प्रतिभाग किया गया, जिनमें केन्द्र द्वारा संचालित किये जा रहे प्रसार कार्यक्रमों पर आधारित तकनीकों को प्रदर्शित किया गया। दोनों प्रदर्शनी में 357 किसानों, प्रसार कर्मियों, वैज्ञानिकों एवं अधिकारियों द्वारा भ्रमण किया गया।
- रबी कृषक महोत्सव के उद्घाटन अवसर पर अक्टूबर 04, 2017 को आयोजित प्रदर्शनी में केन्द्र द्वारा प्रतिभाग करते हुये स्टाल लगाया गया, जिसका अवलोकन मा. मुख्यमंत्री एवं मा. कृषि मंत्री, उत्तराखण्ड सरकार द्वारा किया गया। पन्तनगर कृषि विश्वविद्यालय में अक्टूबर 06–09, 2017 को आयोजित किसान मेला में भी केन्द्र का स्टाल लगाकर तकनीकों को प्रदर्शित किया गया। केन्द्र के स्टाल का लगभग 450 किसानों द्वारा अवलोकन किया गया।

कृषक महोत्सव के उद्घाटन अवसर पर मा. मुख्यमंत्री एवं कृषि मंत्री

- अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन में फसल उत्पादन में तकनीकी प्रसार हेतु राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन के अन्तर्गत दलहनी एवं तिलहनी कलस्टर अग्रिम पंक्ति प्रदर्शनों में मसूर प्रजाति पन्त मसूर–8 के 10 हैक्टेयर में 54 प्रदर्शन, सरसों प्रजाति पन्त पीली सरसों–1 के 5 हैक्टेयर में 14 प्रदर्शनों का आयोजन कृषक प्रक्षेत्रों पर किया गया। इसके अतिरिक्त गेंहूँ की प्रजाति एच.डी.–3086 एवं डी.पी.डब्ल्यू.–621–50 के 15 प्रजातीय प्रदर्शनों का आयोजन 5 हैक्टेयर क्षेत्रफल में किया गया। सब्जी मटर प्रजाति ग्रीन वुड के 20 प्रदर्शनों का आयोजन 6 हैक्टेयर क्षेत्रफल में चकराता विकासखण्ड के क्वानू गांव में किया जा रहा है, जिसका केन्द्र द्वारा स्मार्ट विलेज के रूप में चयन किया गया है। पशुओं के खाद्य उत्पाद बनाये जाने हेतु बरसीम की उन्नतशील प्रजाति वी.एल.–22 के द्वारा दलहनी चारा हेतु विकासखण्ड कालसी, विकासनगर एवं सहसपुर के चयनित 27 कृषक प्रक्षेत्रों पर 3 हैक्टेयर क्षेत्रफल में प्रदर्शनों का आयोजन किया गया। कुक्कुट पालन को बढ़ावा देने हेतु 30 कुक्कुट पालकों को 900 एक दिवसीय चूजों (कड़कनाथ एवं चिबरौ) को वितरित किया गया। पशु स्वास्थ्य शिविर एवं वाहय परजीवी उन्मूलन कार्यक्रम के अन्तर्गत नवम्बर 01, 2017 एवं नवम्बर 29, 2017 को पशु स्वास्थ्य शिविरों का आयोजन ग्राम हरीपुर एवं चकभूड़ में किया गया, जिसमें 58 कृषकों के 119 पशुओं को लाभान्वित किया गया।
- केन्द्र पर अक्टूबर 11, से नवम्बर 10, 2017 एवं नवम्बर 14, से दिसम्बर 13, 2017 तक पन्तनगर के बी.एस.सी. कृषि अन्तिम वर्ष की क्रमशः 19–19 छात्राओं के दो समूह रावे कार्यक्रम के अन्तर्गत ग्राम हरीपुर एवं चकभूड़ में कृषि उत्पादन की जानकारी हेतु प्रतिभाग किया गया। केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा 176 प्रक्षेत्र भ्रमण/डायग्नोस्टिक विजिट कर 1191 कृषकों की कृषि सम्बन्धी समस्याओं का निराकरण किया गया। केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा आल इंडिया रेडियो, देहरादून को 04 तकनीकी वार्ता दी गयी। इसके अतिरिक्त वैज्ञानिकों द्वारा अपने विषय से सम्बन्धित 04 आलेख एवं शोध पत्र प्रकाशित किये गये। केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा अपने विषय से सम्बन्धित संचालित किये जा रहे प्रसार कार्यक्रमों पर आधारित तकनीकी जानकारी को 11 बार समाचार पत्रों में प्रकाशित किया गया।

बी.एस.सी. (कृषि) की छात्राओं द्वारा रावे कार्यक्रम में प्रतिभाग

- केन्द्र के प्रक्षेत्र पर 1.2 हैक्टेयर क्षेत्रफल में 120 कि.ग्रा. प्याज बीज प्रजाति एग्रीफाउण्ड लाईट रेड की पौध तैयार करने हेतु बुवाई की गयी। तैयार पौध की बिक्री दिसम्बर 18, 2017 से प्रारम्भ कर दी गयी है। दिसम्बर माह में 18 कुन्तल पौध की बिक्री 92 किसानों को की गयी, जिससे रू. 1,08,000/– का राजस्व प्राप्त हुआ। इसके अतिरिक्त केन्द्र द्वारा 70 किसानों को बन्द गोभी, फूल गोभी, बैंगन, हरी मिर्च, ब्रोकली के 24740 पौध की बिक्री की गयी। मृदा परीक्षण के अन्तर्गत 51 मृदा नमूनों का परीक्षण किया गया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, गैंना एंचोली (पिथौरागढ़)

- केन्द्र द्वारा विगत त्रैमास में केन्द्र पर 07 तथा केन्द्र से बाहर 15 प्रशिक्षण आयोजित किए गये, जिसमें क्रमशः 147 (पुरूष 69 एवं 78 महिला) एवं 337 (पुरूष 180 एवं 157 महिला) कृषक लाभान्वित हुए तथा ग्रामीण युवाओं को केन्द्र पर 01 प्रशिक्षण दिया गया, जिसमें कुल 10 (पुरूष 10) ग्रामीण युवा लाभान्वित हुए। केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा वाह्य प्रसार कार्यकर्ताओं हेतु 01 प्रशिक्षण आयोजित किया गया, जिसके द्वारा 23 (पुरूष 13 एवं 10 महिला) प्रशिक्षणार्थी लाभान्वित हुए।
- केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा अग्रिम पंक्ति प्रदर्शनों के अन्तर्गत सरसों–1.0 है., सोयाबीन–4.0 है., अरहर–1.0 है., गहत–0.5 है., गेहूँ–3.0 है., सब्जी मटर–0.5 है., बरसीम 0.5 है., जई–0.5 है. प्याज–1.5 है. का आच्छादन किया गया।
- केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा विगत् त्रैमास में कृषकों के प्रक्षेत्र पर 103 भ्रमण किए गये, जिसके द्वारा 270 कृषक लाभान्वित हुए। केन्द्र पर जानकारियाँ प्राप्त करने हेतु किसानों द्वारा 263 भ्रमण किये गये, जिसमें 890 किसान लाभान्वित हुए। प्रचार–प्रसार हेतु दैनिक समाचार पत्र अमर उजाला व दैनिक जागरण में 06 तकनीकी समाचारों को प्रकाशित किया गया। केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा 14 प्रक्षेत्र दिवसों का आयोजन किया गया, जिसमें कुल 243 किसान लाभान्वित हुए। विगत त्रैमास में केन्द्र के वैज्ञानिकों के द्वारा किसान गोष्ठियों में 20 व्याख्यान दिये गये, जिसमें कुल 1443 किसान लाभान्वित हुए। केन्द्र के वैज्ञानिकों के द्वारा 58 किसान गोष्ठियों का आयोजन किया गया, जिसमें कुल 1603 किसान लाभान्वित हुए।
- केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा अक्टूबर 01, 2017 को स्वच्छता ही सेवा दिवस कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें 18 किसानों ने प्रतिभाग किया।
- केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा अक्टूबर 15, 2017 को महिला किसान दिवस का आयोजन किया गया, जिसमें 42 महिला किसानों ने प्रतिभाग किया।
- केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा दिसम्बर 05, 2017 को विश्व मृदा दिवस कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें 189 कृषको ने प्रतिभाग

विश्व मृदा स्वास्थ्य दिवस का आयोजन

किया और 173 किसानों को मृदा स्वास्थ्य कार्ड वितरित किये गये।

- दिसम्बर 28–30, 2017 में केन्द्र के प्रभारी अधिकारी द्वारा के.वी.के. जोनल वर्कशाप एस.के.यू.ए.टी., जम्मू में प्रतिभाग किया गया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, धनौरी (हरिद्वार)

- केन्द्र द्वारा विगत त्रैमास में कुल 13 प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया, जिसमें जनपद के 267 किसानों को कृषि एवं सम्बन्धित विषयों पर तकनीकी रूप से सुदृढ़ किया गया।
- विगत त्रैमास में केन्द्र द्वारा 287 अग्रिम पंक्ति प्रदर्शनों तथा कृषक प्रक्षेत्रों पर कृषि एवं सम्बन्धित विषयक 40 परीक्षणों का आयोजन किया गया।
- केन्द्र द्वारा विगत त्रैमास में रेखीय विभाग के प्रसार कार्यकर्त्ताओं हेतु 01 प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें 17 प्रशिक्षणार्थियों द्वारा प्रतिभाग किया गया।
- केन्द्र द्वारा अक्टूबर 01, 2017 को दक्ष मंदिर (कनखल, हरिद्वार) के घाट (पर्यटन स्थल) पर ''स्वच्छता ही सेवा'' के अन्तर्गत सफाई अभियान कर जनमानस और तीर्थ यात्रियों में स्वच्छता के प्रति जागरूकता लाने का प्रयास किया गया। अक्टूबर 02, 2017 को ''स्वच्छता ही सेवा'' पखवाड़े (सितम्बर 15 से अक्टूबर 02, 2017) के समापन समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर देश के राष्ट्रपिता श्री मोहनदास करमचन्द गाँधी का जन्मदिन मनाया गया। समस्त कार्मिकों ने पुष्पांजलि अर्पित कर उनके दिखाये रास्ते पर चलने का संकल्प लिया। साथ ही अपने परिवेश को स्वच्छ रखने का भी संकल्प लिया।
- केन्द्र द्वारा अक्टूबर 15, 2017 को ग्राम–धनौरा में ''महिला किसान दिवस'' मनाया गया, जिसमें 50 प्रगतिशील कृषक महिलाओं ने प्रतिभाग किया। इस अवसर पर ग्राम के पूर्व प्रधान श्री रामचन्द्र सैनी जी मुख्य अतिथि थे। कार्यक्रम में खेती में महिलाओं के योगदान को सराहा गया तथा उन्हें विभिन्न समस्याओं और श्रम को घटाने वाली तकनीकियों की जानकारी दी गई। खेती से जुड़े आय बढ़ाने वाले व्यावसायों की भी चर्चा की गई। महिलाओं को आर्थिक रूप से सुदृढ़ करने में स्वयं सहायता समूहों के बारे में भी बात की गई। साथ ही परिवार और स्वयं की सेहत का ध्यान रखने हेतु उपायों पर भी चर्चा की गई। इस एक दिवसीय कार्यक्रम में सभी उपस्थितजनों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

महिला किसान दिवस का आयोजन

- केन्द्र के वैज्ञानिकों ने अक्टूबर 07–14, 2017 तक जनपद की विभिन्न न्याय पंचायतों में चलाये जा रहे कृषि महोत्सव (रबी–2017) में भाग लेकर 12 गोष्ठियों में व्याख्यान दिये और चर्चा में भाग लिया। इनमें जनपद के 1396 कृषकों एवं महिलाओं द्वारा प्रतिभाग किया गया।
- केन्द्र के तत्त्वावधान में दिसम्बर 05, 2017 को विश्व मृदा स्वास्थ्य दिवस मनाया गया। इस अवसर पर जनपद के 135 प्रगतिशील कृषकों ने प्रतिभाग किया। कार्यक्रम में कृषकों को खेती में मृदा स्वास्थ्य के महत्व के विषय में जागरूक किया गया। उन्हें मृदा परीक्षण करवाने के पश्चात् उर्वरकों के प्रयोग करने से होने वाले लाभ की भी जानकारी दी गयी। कार्यक्रम में 52 कृषकों को मृदा स्वास्थ्य कार्ड वितरित किये गये।

कृषि विज्ञान केन्द्र, मटेला (अल्मोड़ा)

- केन्द्र द्वारा अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन के अन्तर्गत कलस्टर प्रथम पंक्ति प्रदर्शन–मसूर (पन्त मसूर 8) 14 है.– 140 कृषक, गेहूँ सिंचित (वी.एल. 953) 3.0 है.– 24 कृषक, गेहूँ असिंचित (वी.एल. 907) 2.0 है.– 16 कृषक, पीली सरसों (पी.पी.एस. 1) 2.0 है.– 20 कृषक, जई (यू.पी.ओ. 212) 2.0 है.– 30 कृषक, बरसीम (वरदान) 1.0 है.– 20 कृषक, सब्जी मटर 0.5 है.– 10 कृषकों के खेत पर संचालित हो रहे है।
- केन्द्र द्वारा विगत त्रैमास में 21 प्रशिक्षण कार्यक्रम केन्द्र एवं केन्द्र के बाहर आयोजित किये गये, जिसमें 375 प्रशिक्षणार्थियों द्वारा प्रतिभाग किया गया एवं उन्हें उन्नत तकनीकों की जानकारी प्रदान की गयी। साथ ही रेखीय विभागों द्वारा आयोजित 04 कृषक गोष्ठियों में प्रतिभाग कर केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा 92 कृषकों को उन्नत तकनीक के विषय में विस्तृत जानकारी प्रदान की एवं उनकी विभिन्न समस्याओं का समाधान भी किया गया।
- कृषि महोत्सव रबी 2017–18 में केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा विकास खण्ड स्तर पर आयोजित गोष्ठियों में प्रतिभाग किया गया, जिसमें कृषकों को नवीनतम तकनीकियों की जानकारी प्रदान की गयी। इन कार्यक्रमों में 1719 कृषक पुरूष एवं महिलाओं द्वारा प्रतिभाग किया गया।
- दिसम्बर 05, 2017 को केन्द्र पर विश्व मृदा स्वास्थ्य दिवस कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें 45 कृषकों को मृदा स्वास्थ्य कार्ड का वितरण एवं मृदा स्वास्थ्य संबंधी जानकारी प्रदान की गयी। इस अवसर पर 45 कृषकों द्वारा प्रतिभाग किया

कृषि विज्ञान केन्द्र, काशीपुर (ऊधमसिंहनगर)

- केन्द्र द्वारा विगत त्रैमास में जनपद उधमसिंहनगर के विभिन्न क्षेत्रो में एवं केन्द्र पर कुल 05 प्रशिक्षणों का आयोजन किया गया, जिसमें 105 किसानों को लाभान्वित किया गया। इन प्रशिक्षणों का आयोजन विभिन्न विषयों जैसे मत्स्य आहार सुत्रीकरण, मृदा नमूना लेने की तकनीक, सोया आधारित खाद्य–पदार्थ, फल सब्जी परिरक्षण, स्वयं सहायता समूह बनाने पर किया गया। इसके अतिरिक्त गन्ना उत्पादन तकनीकी पर प्रसार कार्यकताओं के लिये 02 प्रशिक्षण आयोजित किये गए। प्रशिक्षणों के अतिरिक्त कृषि एवं इससे सम्बन्धित विषयों पर रेखीय विभागों द्वारा आयोजित 11 किसान गोष्ठियों में भी केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा प्रतिभाग कर 355 किसानों को तकनीकी रुप से जागरुक किया गया।
- विगत त्रैमास में केन्द्र द्वारा कृषक प्रक्षेत्रों पर अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन के अर्न्तगत तिलहन फसल पर 18 प्रदर्शन 7.0 है. क्षेत्रफल में आयोजित किये गए। दलहनी फसलों के अर्न्तगत कुल 140 प्रदर्शन 39 है. क्षेत्रफल में आयोजित किये गए एवं अन्य फसलों के अर्न्तगत 41 प्रदर्शन 2.37 है. में आयोजित किये गये। इन प्रदर्शनों का आयोजन तोरिया (पन्त पीली सरसों–1), उर्द (पी.यू.–31), मसूर (पी.एल.–8), चना (पी.जी.–186), पोषण वाटिका, सब्जी मटर (काशी उदय), एवं मत्स्य की नवीन प्रजाति पर किया गया।

अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन का आयोजन

- केन्द्र के मत्स्य वैज्ञानिक डा. एस.के. शर्मा द्वारा जयन्ती रोहू प्रजाति पर 05 ऑन फार्म ट्रायल आयोजित किये गए एवं डा. प्रतिभा सिंह, गृह वैज्ञानिक द्वारा ग्राम बन्नाखेड़ा में पौष्टिक आटे द्वारा कृषक महिलाओं के पोषण स्तर में सुधार हेतु 110 महिलाओं पर 05 ऑन फार्म ट्रायल आयोजित किये गए।
- विगत त्रैमास में केन्द्र द्वारा विभिन्न स्थानीय एवं राज्य स्तरीय समाचार पत्रों में कृषि कार्यो से सम्बन्धित 09 समाचार प्रकाशित किये गये। केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा 03 टी. वी. वार्ताएं आयोजित की गई। वैज्ञानिकों द्वारा 78 प्रक्षेत्र भ्रमण कर 364 कृषकों को लाभान्वित किया गया। केन्द्र के प्रभारी अधिकारी डा. सी. तिवारी द्वारा दिसम्बर 04, 2017 को पन्तनगर में जे.एन.यू. के छात्रों को लेक्चर दिया गया।
- भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद–अटारी, लुधियाना द्वारा दिसम्बर 28–30, 2017 को कृषि विज्ञान केन्द्रों की क्षेत्रीय कार्यशाला का आयोजन जम्मू में किया गया, जिसमें प्रतिभाग कर केन्द्र के प्रभारी अधिकारी डा. सी. तिवारी द्वारा वर्ष 2016–17 में केन्द्र द्वारा संचालित किये गए प्रसार कार्यक्रमों का प्रस्तुतिकरण किया गया। अक्टूबर 24–27, 2017 तक केन्द्र की गृह वैज्ञानिक डा. प्रतिभा सिंह द्वारा प्रसार शिक्षा संस्थान,

नीलोखेड़ी (करनाल) में कम्यूनिकेशन मैनेजमेन्ट स्किल्स पर आयोजित कार्यशाला में प्रतिभाग किया गया। एक दिवसीय कार्यशाला एग्रीकल्चर एक्सटेन्शन सिस्टम इन उत्तराखण्ड में अक्टूबर 31, 2017 को केन्द्र के प्रभारी अधिकारी द्वारा प्रतिभाग किया गया। नवम्बर 11–12, 2017 को केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा इनटैलेक्टूअल प्रोपर्टी राइट्स आपोरचुनिटिज एवं चैलेन्जिज में प्रतिभाग किया गया।

- केन्द्र के प्रभारी अधिकारी डा. सी. तिवारी को दिसम्बर 11, 2017 को इन्टरनेशनल बिजनेस काउन्सिंल, नई दिल्ली द्वारा भारत विद्या रत्न से सम्मानित किया गया।
- केन्द्र द्वारा दिसम्बर 05, 2017 को ग्राम बन्नाखेड़ा में विश्व मृदा स्वास्थ्य दिवस का आयोजन किया गया, जिसमें केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा मृदा स्वास्थ्य सुधार हेतु उपयोगी जानकारी प्रदान की गई एवं किसानो को तकनीकी रुप से जागरुक किया गया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, लोहाघाट (चम्पावत)

- केन्द्र द्वारा महिलाओं के कार्यबोझ में कमी लाने हेतु 05 महिलाओं के प्रक्षेत्रों पर परीक्षण (आन फार्म ट्रायल) लगाये गये, जिसके अन्तर्गत फसल कटाई के दौरान उनकी कार्यक्षमता को बढाने के लिए सामान्य दराती के स्थान पर उन्नत दराती का प्रयोग किया गया। सकारात्मक परिणाम आने पर इस तकनीक को आगे प्रसारित किया जायेगा।
- प्रथम पंक्ति प्रदर्शन के अन्तर्गत विगत त्रैमास में दलहनी व तिलहनी फसलों पर कुल 04 है. क्षेत्रफल में प्रजातीय प्रदर्शन लगाये गये हैं, जिसके अन्तर्गत तोरिया (1.0 है.) की पी.टी. 507 तथा मसूर (3.0 है.) की पी.एल. 8 प्रजाति लगाई गई है।
- गेहूँ की यू.पी. 2572 प्रजाति को बढावा देने के लिए 5.0 है. क्षेत्रफल में प्रजातीय प्रदर्शन लगाये गये हैं।
- गेहूँ में पीला रतुआ रोग के नियंत्रण हेतु 1.0 है. क्षेत्रफल में प्रथम पंक्ति प्रदर्शनों का आयोजन किया गया है। रोग के नियंत्रण हेतु प्रोपेकोनाजोल 25 ई.सी. नामक रसायन को 0.1 प्रतिशत सान्द्रता का घोल बनाकर फरवरी के दूसरे सप्ताह तथा दूसरा छिडकाव रोग के लक्षण दिखाई देने पर किया जाता है। यह प्रयोग गेहूँ की यू.पी. 2572 प्रजाति पर किया गया है।
- रबी मौसम में हरे चारे की समस्या के समाधान हेतु केन्द्र द्वारा माह अक्टूबर में जई की यू.पी.ओ. 212 प्रजाति पर 2.0 है. क्षेत्रफल में 30 कृषकों के प्रक्षेत्रों पर प्रथम पंक्ति प्रदर्शन लगाये गये। प्रदर्शन का उद्देश्य जाड़े के मौसम में चारे की उपलब्धता को बढाना है।
- दैनिक आहार में फल सब्जियों के प्रयोग को बढावा देने के उद्देश्य से केन्द्र के गृह विज्ञान इकाई द्वारा पोषण वाटिका प्रबन्धन विषय पर 15 कृषकों के प्रक्षेत्रों पर कुल 0.3 हैक्टेयर क्षेत्रफल में प्रथम पंक्ति प्रदर्शन लगाये गये। वाटिका में भूमिगत, हरे पत्तेदार तथा फल वाली मौसमी सब्जियों को लगवाया गया, जिससे दैनिक भोजन में संस्तुति के अनुसार सभी प्रकार की सब्जियों का समावेश करके सूक्ष्म पोषण तत्वों की कमी से होने वाले रोगों से निजात मिल सके।

गृहवाटिका में स्ट्राबेरी की फसल

- केन्द्र द्वारा विगत त्रैमास में पोषण वाटिका प्रबन्धन एवं फसल उत्पादन पर कुल 04 प्रक्षेत्र दिवसों का आयोजन कर 95 कृषकों को नवीनतम जानकारियॉ दी गई।
- केन्द्र द्वारा विगत त्रैमास में फसल उत्पादन, मृदा परीक्षण, गृह विज्ञान, मत्स्य पालन, फसल सुरक्षा व पशु पालन विषय में कुल 14 प्रशिक्षणों का आयोजन किया गया, जिसमें कुल 280 कृषकों ने भाग लेकर कृषि की नवीनतम जानकारियॉ प्राप्त की।
- नवम्बर 17, 2017 को केन्द्र द्वारा सुनार गॉव ब्लाक पाटी, चम्पावत में ''कीटनाशी रसायनों के सुरक्षित प्रयोग'' विषय पर कृषकों के क्षमता विकास हेतु जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में डा. एम.पी. सिंह एवं कु. गायत्री देवी द्वारा कृषकों/महिला कृषकों को सब्जियों, फलों एवं फसलों में अधिक विषैले रसायनों के स्थान पर जैविक कीटनाशों अथवा अपेक्षाकृत कम विषैले रसायनों के प्रयोग से सम्बन्धित जानकारी दी गयी। इस कार्यक्रम में सुनार गॉव, ओली गॉव, परध्यानी एवं कापड़ी गॉव के लगभग 80 कृषकों एवं महिला कृषकों ने प्रतिभाग किया। इस कार्यक्रम में उपस्थित कृषकों को व्यावहारिक प्रशिक्षण भी दिया गया।
- केन्द्र पर जनपद चम्पावत के 29 राजकीय इन्टर कालेज व राजकीय कन्या विद्यालय के कुल 767 छात्रों का शैक्षिक भ्रमण कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें छात्रों को कृषि उत्पादन बढाने के नये–नये तरीकों से अवगत कराया गया।
- केन्द्र द्वारा विगत त्रैमास में कुल 14 कृषको को प्याज की एग्री फाउन्ड लाइट रेड प्रजाति की पौध उपलब्ध कराई गई।
- केन्द्र के मृदा वैज्ञानिक डा. एस.पी. गंगवार ने अक्टूबर 24 से नवम्बर 14, 2017 तक पंजाब एग्रीकल्वर यूनिवर्सिटी, लुधियाना में कृषि विज्ञान केन्द्र, जालन्धर द्वारा ''एडवान्स इन फूड प्रोसेसिंग एण्ड न्यूट्रीशन लिंकेजज फार इन्टरप्रेनोरशिप डवलपमेन्ट'' विषय पर आयोजित विन्टर स्कूल में प्रतिभाग किया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, जाखधार (रूद्रप्रयाग)

- विगत त्रैमास में केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा 24 प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया, जिसमें 422 कृषकों, कृषक महिलाओं, ग्रामीण युवाओं द्वारा प्रतिभाग किया। इन कार्यक्रमों में प्रशिक्षणार्थियों को सूक्ष्म सिंचाई तकनीक, पॉली टनल में सब्जी उत्पादन, पर्वतीय क्षेत्रों में जैविक कृषि, मिर्च उत्पादन की उन्नत शस्य क्रियाओं आदि विषयों पर विस्तृत जानकारी दी गयी तथा 'Seeing is believing' सिद्धान्त के तहत वीडियों फिल्मों के माध्यम से किसानों को प्रशिक्षित किया गया। किसानों द्वारा केन्द्र के विषय वस्तु विशेषज्ञों से समसामायिक विषयों जैसे फसलों का कटाई उपरान्त प्रबन्धन, सूक्ष्म सिंचाई तकनीक, वर्मी कम्पोस्ट बनाने की विधि एवं उपयोग, अन्न भंडारण, दलहन उत्पादन की उन्नत क्रियाये, अदरक एवं हल्दी उत्पादन की उन्नत क्रियाये, स्वच्छ दुग्ध उत्पादन के वैज्ञानिक तरीके, घर के पिछवाड़े कुक्कुट पालन आदि विषयों पर जानकारी प्राप्त की।
- इस अवधि में केन्द्र द्वारा 04 ऑन फार्म ट्रायल लगाये गये, जिसके तहत 24 किसानों को लाभान्वित किया गया। साथ ही अन्य फसलों के अन्तर्गत 86 प्रदर्शनों का 2.72 है. क्षेत्रफल पर आयोजन किया गया। खरीफ के मौसम में लगाये गये प्रदर्शनों पर 02 प्रक्षेत्र दिवसों का आयोजन किया गया, जिसमें किसानों के साथ–साथ रेखीय विभागों द्वारा भी प्रतिभाग किया गया। केन्द्र द्वारा उक्त अवधि में 02 कृषि प्रदर्शनियों का भी आयोजन किया गया, जिसमें 1085 कृषकों, कृषक महिलाओं, जनप्रतिनिधियों एवं रेखीय विभागों के अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा प्रतिभाग किया गया।
- किसानों हेतु केन्द्र के वैज्ञानिक द्वारा एक रेडियो वार्ता रिकार्ड कराई गई तथा केन्द्र की गतिविधियों से सम्बंधित दो बार समाचार पत्रों में रिपोर्टिंग की गई है।
- केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा उक्त अवधि में 86 बार विभिन्न गॉवों में भ्रमण कर 430 किसानों की मौके पर कृषि संबधी समस्याओं का निराकरण किया गया। केन्द्र पर आये आगन्तुकों के 12 समूहों को केन्द्र पर की जा रही विभिन्न गतिविधियों से परिचित कराया गया है। किसानों हेतु इस अवधि में 06 गोष्ठियों का भी आयोजन किया गया, जिससे 1411 प्रतिभागियों ने लाभ प्राप्त किया। इन गोष्ठियों में केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा विशेषज्ञ संसाधक के रूप में व्याख्यान दिये गये। केन्द्र पर 71 बार 315 किसानों द्वारा भ्रमण किया गया।
- क्षेत्र के किसानों से वैज्ञानिकों से दूरभाष के माध्यम से 44 बार संपर्क कर उनकी समस्याओं का समाधान किया गया। किसानों के ज्ञान में समसामयिक विषयों पर ज्ञानवर्धन करने हेतु विभिन्न विषयों पर 05 प्रकार के प्रसार साहित्यों का वितरण किया गया। केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा केन्द्र पर किये जाने वाले प्रशिक्षणों में 10 बार 160 प्रतिभागियों हेतु विभिन्न विषयों से संबधित फिल्मों का प्रदर्शन किया गया तथा वैज्ञानिकों द्वारा केन्द्र पर 22 व्याख्यान भी दिये गये।
- केन्द्र के फार्म प्रक्षेत्र पर गांठगोभी के 3000, ब्रोकली के 5000, फूलगोभी के 3000, राई के 1500, पत्ता गोभी के 2000, नाशपाती के 215 तथा सुगन्धित गुलाब के 110 पौधों का विक्रय कर 71 किसानों को लाभान्वित किया गया।
- इस अवधि में केन्द्र पर जनप्रतिनिधियों के अलावा विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति, डा. ए.के. मिश्रा; डा. वाई.पी.एस. डबास, निदेशक प्रसार शिक्षा; डा. एस.एन. तिवारी, निदेशक शोध; डा. एस.पी. उनियाल, प्राध्यापक, सब्जी विज्ञान विभाग; डा. जे.एल. सिंह, प्राध्यापक, औषधि विज्ञान विभाग तथा डा. बी.एस. कार्की, प्राध्यापक, सस्य विज्ञान द्वारा भ्रमण किया गया।

- माननीय कुलपति डा. ए.के. मिश्रा द्वारा ग्राम देवर का भ्रमण किया गया। कुलपति द्वारा ग्राम देवर के किसानों को संबोधित करते हुए कृषि विज्ञान केन्द्र तथा विश्वविद्यालय स्तर से सभी प्रकार की तकनीकी सहायता दिये जाने का आश्वासन दिया गया तथा कृषि विज्ञान केन्द्र, जाखधार के वैज्ञानिकों को किसानों की हर संभव सहायता कर कृषि आय को दो गुना करने हेतु प्रयत्नशील रहने हेतु निर्देशित किया तथा ग्राम देवर को स्मार्ट विलेज की परिकल्पना के अनुरूप विकसित करने हेतु अंगीकृत किया गया। इस अवसर पर जनपद रूद्रप्रयाग के जिलाधिकारी श्री मंगेश घिल्डियाल जी द्वारा किसानों को प्रशस्ति पत्र प्रदान किये गये।

किसानों को प्रशस्ति–पत्र देते हुए कुलपति डा. ए.के. मिश्रा

कृषि विज्ञान केन्द्रों की वैज्ञानिक सलाहकार समिति की बैठक

कृषि विज्ञान केन्द्र, धनौरी (हरिद्वार), ढकरानी (देहरादून), ज्योलीकोट (नैनीताल), काशीपुर (ऊधमसिंहनगर), मटेला (अल्मोड़ा), ग्वालदम (चमोली) एवं जाखधार (रूद्रप्रयाग) की वैज्ञानिक सलाहकार समिति की बैठकों का आयोजन क्रमशः दिसम्बर 04, 2017; दिसम्बर 05, 2017; दिसम्बर 11, 2017; दिसम्बर 12, 2017; दिसम्बर 19, 2017; दिसम्बर 20, 2017 एवं दिसम्बर 21, 2017 को किया गया। इन बैठकों में पिछली बैठक से नवम्बर, 2017 तक की अवधि में केन्द्र द्वारा संचालित किये गये प्रसार कार्यक्रमों तथा दिसम्बर, 2017 से मार्च, 2018 तथा आगामी वर्ष 2018–19 की कार्ययोजना का प्रस्तुतिकरण किया गया। बैठक की अध्यक्षता पन्तनगर विश्वविद्यालय के कुलपति, डा. ए.के. मिश्रा द्वारा की गई। इसमें विश्वविद्यालय से निदेशक प्रसार शिक्षा, डा. वाई.पी.एस. डबास; निदेशक अनुसंधान केन्द्र, डा. एस.एन. तिवारी; प्राध्यापक सस्य, डा. बी.एस. कार्की; प्राध्यापक मत्स्य विज्ञान, डा. आर.एन. राम; प्राध्यापक सस्य विज्ञान, डा. बी.एस. महापात्रा; प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष पशु चिकित्सा प्रसार, डा. अवधेश कुमार; प्राध्यापक पशु औषधि विज्ञान, डा. जे.एल. सिंह; प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष सस्य विज्ञान, डा. डी.एस. पाण्डे; प्राध्यापक सस्य विज्ञान, डा. पी.सी. पाण्डे; प्राध्यापक सब्जी विज्ञान, डा. एस.पी. उनियाल तथा प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष सब्जी विज्ञान विभाग, डा. मनोज राघव भी उपस्थित रहे। बैठक में सम्बन्धित जनपद के रेखीय विभागों के अधिकारियों, कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिकों व कर्मचारियों एवं कृषक सदस्यों द्वारा प्रतिभाग किया गया।

वैज्ञानिक सलाहकार समिति की बैठक का आयोजन

कृषि विज्ञान केन्द्रों की जोन-1 की क्षेत्रीय कार्यशाला में प्रतिभाग

समस्त कृषि विज्ञान केन्द्रों के कार्यक्रम समन्वयकों/प्रभारी अधिकारियों के साथ–साथ प्रसार शिक्षा निदेशालय के डा. बी.एस. कार्की, प्राध्यापक सस्य विज्ञान एवं डा. राम जी मौर्य, प्राध्यापक सस्य विज्ञान व प्रभारी अधिकारी एटिक द्वारा शैर–ए–कश्मीर यूनिवर्सिटी ऑफ एग्रीकल्चरल साइन्सेज एण्ड टैक्नोलॉजी, जम्मू में दिसम्बर 28–30, 2017 में आयोजित जोन–1, लुधियाना के कृषि विज्ञान केन्द्रों की क्षेत्रीय कार्यशाला में प्रतिभाग किया गया।

प्रसार शिक्षा संस्थान, नीलोखेड़ी की प्रबन्ध समिति की बैठक में प्रतिभाग

निदेशालय के ई. अनिल कुमार, सह निदेशक (मृदा एवं जल संरक्षण अभियांत्रिकी) द्वारा समेटी–मैहशोबरा (हिमाचल प्रदेश) पर दिसम्बर 27, 2017 को आयोजित प्रसार शिक्षा संस्थान, नीलोखेड़ी (हरियाणा) की 30वीं प्रबन्ध समिति की बैठक में प्रतिभाग किया गया।

समेटी–उत्तराखण्ड द्वारा आयोजित प्रशिक्षण

राज्य कृषि प्रबन्धन एवं प्रसार प्रशिक्षण संस्थान, उत्तराखण्ड (समेटी–उत्तराखण्ड) द्वारा विगत त्रैमास में राज्य के प्रगतिशील कृषक, कृषक सलाहकार समिति (एफ.ए.सी.), एफ.एफ.डी.ए. के सदस्य, मधुमक्खी पालक, मत्स्य पालक एवं एच.टी.एम. के प्रसार कर्मियों हेतु 'शीतजल मत्स्य पालन तकनीकी', एवं 'मधुमक्खी पालनः एक लाभकारी व्यवसाय' विषयक 02 प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों के द्वारा कुल 20 प्रशिक्षणार्थी लाभान्वित हुए। प्रशिक्षण कार्यक्रम का संचालन ई. अनिल कुमार, सह निदेशक (मृदा एवं जल संरक्षण अभियांत्रिकी) एवं डा. बी.वी. सिंह, वरिष्ठ तकनीकी सहायक द्वारा किया गया।

प्रशिक्षण एवं भ्रमण इकाई द्वारा आयोजित प्रशिक्षण/भ्रमण

प्रसार शिक्षा निदेशालय के प्रशिक्षण एवं भ्रमण इकाई द्वारा विगत त्रैमास में विभिन्न सरकारी विभागों, स्वयं–सेवी संस्थाओं, निजी एवं सार्वजनिक फर्मों तथा परियोजनाओं द्वारा प्रायोजित कुल 11 प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। आयोजित किये गये यह प्रशिक्षण कृषि की उन्नत खेती, पशुपालन, आई.पी.एम. एण्ड आई.एन.एम. एवं माईक्रो स्प्रिंकलर से सम्बन्धित थे। इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों से 484 प्रशिक्षणार्थी लाभान्वित हुए। अधिकांश प्रशिक्षण एक दिवसीय से लेकर तीन दिवसीय थे। प्रशिक्षण एवं भ्रमण कार्यक्रम का संचालन प्राध्यापक एवं प्रभारी प्रशिक्षण डा. एस.के. बंसल द्वारा किया गया।

एकल खिड़की पद्धति से कृषक सेवा

प्रसार शिक्षा निदेशालय के अन्तर्गत कार्यरत कृषि प्रौद्योगिकी सूचना केन्द्र (एटिक) द्वारा विगत त्रैमास में पन्तनगर कृषक हेल्पलाईन (05944–234810, 05944–235580) एवं किसान कॉल सेन्टर (1800–180–1551 टोल फ्री) के माध्यम से किसानों द्वारा कुल 417 प्रश्न पूछे गये, जिनका समाधान सम्बन्धित विषय के वैज्ञानिकों द्वारा किया गया। देश एवं प्रदेश के विभिन्न स्थानों से आये 673 कृषकों ने एटिक पर भ्रमण किया एवं किसानों द्वारा एटिक से कुल रू. 67,285 के साहित्य एवं रू. 9,27,773 के गेहूँ, सरसों, चना, मसूर, सोयाबीन आदि फसलों एवं सब्जियों के बीजों का क्रय किया गया। एटिक की गतिविधियों का संचालन डा. राम जी मौर्य, प्राध्यापक (सस्य)/प्रभारी अधिकारी एटिक के मार्गदर्शन में किया गया।

आगामी त्रैमास में कृषकों हेतु महत्वपूर्ण बिन्दु

कृषि हेतु

- देर से बोये गये गेंहू में चौड़ी पत्ती वाले खरपतवारों की रोकथाम के लिए 2–4 डी सोडियम साल्ट 80 प्रतिशत 625 ग्राम या 2–4 डी इमाइन साल्ट 72 प्रतिशत 600 मिली. दवा को 600–800 ली. पानी में घोल बनाकर प्रति है. की दर से बुवाई के 40–45 दिन के अन्दर पानी में घोल कर छिड़काव करें।
- मसूर, मटर व चना में रतुआ रोग के नियंत्रण के लिए जिंक मैगनीज कार्बामेट की 2.5 किग्रा. मात्रा को 700–800 लीटर पानी में मिलाकर प्रति है. की दर से छिड़काव करें। चने में फलीबेधक कीट के नियंत्रण हेतु क्यूनालफॉस 25 ई.सी. की 1.25 लीटर या साइपरमेथ्रिन 500–600 मिली. को 600–800 लीटर पानी में मिलाकर प्रति है. की दर से छिड़काव करें।
- गेंहू में पीला रतुआ रोग का प्रकोप होने पर प्रोपीकोनाजोल 500 मिली. या हैक्साकोनेजोल 1 लीटर प्रति है. की दर से छिड़काव करें। पर्वतीय क्षेत्र में गेंहू में पर्याप्त नमी होने पर असिंचित दशा में 0.5 किग्रा. व सिंचित दशा में 2–2.5 किग्रा. यूरिया प्रति नाली की दर से डालें।
- मटर और मसूर में सफेद विगलन रोग दिखने पर कार्बेन्डाजिम के 0.1 प्रतिशत घोल का छिड़काव करें।
- सरसों एवं तोरिया में माहू कीट का प्रकोप होने पर 1 लीटर डाइमेथोएट 30 ई.सी. या मोनोक्रोटोफॉस 36 एस.एल. का 1.4 लीटर प्रति हैक्टेयर की दर से छिड़काव करें।
- पर्वतीय क्षेत्रों में जनवरी माह में घाटियों में आलू, लोबिया, राजमा, भिण्डी एवं खीरावर्गीय फसलों की बुवाई करें।
- पाला की सम्भावना होने पर पपीते के बाग में सिंचाई करें तथा धुंआ करें।
- फरवरी के दूसरे पखवाड़ें में सूरजमुखी की बुवाई करें।

- फरवरी माह में मैदानी क्षेत्रों में बैंगन की 60x45 सें.मी. की दूरी पर रोपाई करें।
- पालक, मैंथी एवं धनिया में कीटों से बचाव के लिए 0.2 प्रतिशत रोगोर कीटनाशी का एक छिड़काव करें।
- पर्वतीय क्षेत्रों में फरवरी माह में आलू की अगेती बुवाई 45–60 से.मी. की दूरी पर बनी पंक्तियों में 15–20 से.मी. की दूरी पर 5–7 से.मी. गहराई पर करें।
- फरवरी माह में पर्वतीय क्षेत्रों में टमाटर, शिमला मिर्च की नर्सरी डालें एवं खीरावर्गीय फसलों की बुवाई करें।
- मार्च माह में उर्द एवं मूंग की क्रमशः 30–35 किग्रा. एवं 25–30 किग्रा. बीज की प्रति है. दर से बुवाई करें।
- पर्वतीय क्षेत्र में मार्च माह में चना, मटर के पत्ती सुरंगक व फली छेदक कीट तथा मसूर के माहू कीट के नियंत्रण के लिए मोनोक्रोटोफास 15 मिली. दवा को 16–20 लीटर पानी में घोलकर प्रति नाली की दर से छिड़काव करें।

पशुपालन हेतु

- मुर्गी घरों के बिछावन को दिन में 2–3 बार पलटें। मुर्गी घरों में दिन और रात को कुल 16 घंटे प्रकाश बनाए रखें।
- फरवरी माह में चूजे पालने की व्यवस्था करें।
- व्यस्क पशुओं को फरवरी माह में अंतःकृमि नाशक दवा पिलाएं। छः माह की उम्र के बच्चों को मुंहपका, खुरपका रोगों से बचाव हेतु टीका लगवाएं।
- पशुओं को अफरा से बचाव हेतु फूली हुई बरसीम न खिलाएं। अफरा होने पर उपचार हेतु 500 मिली. सरसों का तेल, 100 ग्राम काला नमक, 50 ग्राम मीठा सोडा, 15 ग्राम अजवाईन तथा 10 ग्राम हींग का मिश्रण खिलाएं।

निदेशक प्रसार शिक्षा डा. वाई.पी.एस. डबास द्वारा विभिन्न वाह्य आयोजनों/बैठकों में प्रतिभाग

- नवम्बर 27, 2017 को सचिवालय देहरादून में विधान सभा सत्र में पूछे जाने वाले प्रश्नों की समीक्षा बैठक में प्रतिभाग किया गया।
- दिसम्बर 02, 2017 को जनपद मुदाराबाद में कृषि विज्ञान केन्द्र स्थापित किये जाने हेतु साइट सलैक्शन कमेटी में प्रतिभाग किया गया।
- दिसम्बर 22, 2017 को देहरादून में आयोजित उत्तराखण्ड विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद (यू–कास्ट) के विभिन्न परिषदीय एजेन्डा बिन्दुओं पर विचार–विमर्श हेतु मुख्य सचिव, उत्तराखण्ड शासन की अध्यक्षता में आहूत बैठक में प्रतिभाग किया गया।

निदेशक की कलम से

विश्वविद्यालय के अन्तर्गत राज्य के 09 जनपदों में कार्यरत कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा प्रदेश के सुदूर पर्वतीय क्षेत्रों में कृषि की उन्नत तकनीकों का प्रसार किया जा रहा है। राज्य के कृषकों को उन्नत तकनीकों से अवगत कराकर उनको इन तकनीकों से अधिक लाभ प्राप्त करने हेतु प्रोत्साहित करने के लिए कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा प्रशिक्षणों, अग्रिम पंक्ति प्रदर्शनों एवं प्रक्षेत्र परीक्षणों इत्यादि का आयोजन किया जाता है। कृषक भी इन उन्नत तकनीकों को अपनाने एवं हस्तानान्तरण में अपनी रूचि एवं सहयोग प्रदान करते हैं। साथ ही प्रसार शिक्षा निदेशालय के प्रशिक्षण एवं भ्रमण इकाई, कृषि प्रौद्योगिकी सूचना केन्द्र एवं प्रसार शिक्षा निदेशालय स्थित राज्य कृषि प्रबन्धन एवं प्रसार प्रशिक्षण संस्थान (समेटी), उत्तराखण्ड भी कृषि तकनीकी हस्तानान्तरण एवं कृषि व सम्बन्धित क्षेत्र में मानव संसाधन विकास हेतु प्रसार कर्मियों/कृषकों, कृषक महिलाओं/ग्रामीण युवक–युवतियों में क्षमता विकास हेतु सतत् प्रयासरत् हैं।

कृषकों से प्राप्त अनुभवों के आधार पर कृषि विज्ञान केन्द्र, क्षेत्र के कृषकों के लिए एक सूचना स्रोत के रूप में कार्य कर रहे हैं, जिनसे प्राप्त सूचनाओं एवं तकनीकों को अपनाकर कृषक अपनी आय में वृद्धि कर आर्थिक संतुष्टि प्राप्त करते हैं। इसी सन्दर्भ में वर्ष 2017 में प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा 315 प्रशिक्षण आयोजित किए गए, जिससे 7,488 प्रशिक्षणार्थी लाभान्वित हुए, जिसमें प्रशिक्षण एवं भ्रमण इकाई द्वारा 31 एवं कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा 272 प्रशिक्षणों का आयोजन किया गया, जिससे क्रमशः 1,036 एवं 6,205 प्रशिक्षणार्थी लाभान्वित हुए। इसके अतिरिक्त राज्य कृषि प्रबन्धन एवं प्रसार प्रशिक्षण संस्थान, उत्तराखण्ड (समेटी–उत्तराखण्ड) द्वारा जिला एवं विकास खण्ड स्तरीय प्रसार कार्यकर्ताओं/अधिकारियों, एफ.ए.सी. सदस्यों, प्रसार कर्मियों, फार्म स्कूल संचालकों, ब्लाक तकनीकी प्रबन्धकों एवं प्रगतिशील कृषकों हेतु 12 प्रशिक्षण आयोजित किये गये, जिसमें कुल 247 प्रशिक्षणार्थी लाभान्वित हुए।

कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा तिलहन, दलहन एवं अन्य फसलों में 1,781 अग्रिम पंक्ति प्रदर्शनों का आयोजन किया गया, जिनके अन्तर्गत कुल 161.66 है. क्षेत्र आच्छादित किया गया तथा 40 प्रक्षेत्र परीक्षणों का आयोजन किया गया, जिससे 271 कृषक लाभान्वित हुए। कृषि विज्ञान केन्द्रों के वैज्ञानिकों द्वारा उक्त अवधि में 1,187 प्रक्षेत्र भ्रमण किये गये, जिनके माध्यम से 9,070 कृषकों की समस्याओं का समाधान करने के साथ–साथ उन्हें उन्नत कृषि की तकनीकी उपलब्ध कराई गई। केन्द्रों द्वारा 04 किसान मेलों, 09 कृषि प्रदर्शनियों एवं 110 किसान गोष्ठियों का आयोजन किया गया, जिनमें क्रमशः 15651, 13643 एवं 5900 कृषक लाभान्वित हुए। कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा उक्त अवधि में 19 प्रक्षेत्र दिवसों, 314 नैदानिकी भ्रमण, 28 परामर्श भ्रमण आयोजित किये गये, जिनसे क्रमशः 553, 1778 एवं 68 कृषक लाभान्वित हुए। केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा 02 पशु शिविरों का आयोजन किया गया, जिसमें 67 पशुओं का स्वास्थ्य परीक्षण किया गया।

वैज्ञानिकों द्वारा कृषकोंपयोगी 14 रेडियो वार्ताओं तथा 44 टी.वी. कार्यक्रमों के प्रसारण हेतु रिकार्डिंग दी गई। इसके साथ ही 08 उपयोगी कृषि लेखों का भी प्रकाशन किया गया। केन्द्र द्वारा संचालित किये जा रहे गतिविधियों का विभिन्न समाचार पत्रों में 45 समाचार प्रकाशित हुए। कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा 111.52 कु. खाद्यान्न फसलों के उन्नत बीजों के साथ–साथ 2,46,000 सब्जी पौधों तथा 7,242 उत्कृष्ट प्रजाति के फलों के पौधों का भी उत्पादन किया गया।

कृषकों को समस्त सूचनाएं एक स्थल पर प्रदान करने के उद्देश्य से एकल खिड़की पद्धति के अन्तर्गत कृषि प्रौद्योगिकी सूचना केन्द्र द्वारा टेलीफोन एवं हेल्पलाइन के माध्यम से उक्त अवधि में कृषकों की 977 समस्याओं का समाधान किया गया तथा 1863 कृषकों ने केन्द्र पर भ्रमण किया। साथ ही एटिक द्वारा रू0 1,40,0000 के प्रसार पुस्तिकाओं तथा रू0 4,09,000 के बीजों की बिक्री की गई।

कृषि विज्ञान केन्द्रों को अपनी कार्ययोजना में क्षेत्र आधारित तकनीकों, सरकारी व गैर सरकारी क्षेत्रों की सहभागिता बढ़ाने, गुणवत्तायुक्त बीज, रोपण सामग्री, परागण हेतु मधुमक्खी, जैविक खाद, जैविक कीटनाशी, पोषक तत्व, नाशीजीव प्रबन्धन, कटाई पूर्व एवं उपरान्त प्रबन्धन पर ध्यान देना होगा। केन्द्रों को कृषि ऋण एवं फसल बीमा सम्बन्धी जानकारी भी कृषकों को प्रदान करनी होगी, जिससे कृषक उपलब्ध वित्तीय सुविधाओं का लाभ उठा सकें।

कृषि विज्ञान केन्द्रों का कृषि विकास में महत्वपूर्ण योगदान है। सभी प्रसार वैज्ञानिकों से यह अपेक्षा है कि वे प्रदेश के कृषि विकास एवं कृषकों की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने में अपना अमूल्य योगदान देंगे व उत्तराखण्ड को खाद्यान्न के साथ–साथ अन्य क्षेत्रों में भी आत्मनिर्भर बनाएंगे।

(वाई0पी0एस0 डबास)

सम्पर्क सूत्र :– डा0 वाई0पी0एस0 डबास, निदेशक प्रसार शिक्षा, गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
पन्तनगर–263 145, ऊधमसिंह नगर (उत्तराखण्ड), ☎ 05944–233336 (कार्यालय), 233664 (निवास), Email-dee_gbpuat@rediffmail.com

विश्वविद्यालय हेल्प लाइन दूरभाष सं0 05944–234810, किसान कॉल सेन्टर निःशुल्क दूरभाष सं0 1800–180–1551

दृश्य यात्रा

102वाँ अखिल भारतीय किसान मेला एवं कृषि उद्योग प्रदर्शनी की झलकियाँ

कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा आयोजित प्रशिक्षण, प्रदर्शन एवं भ्रमण कार्यक्रमों की झलकियाँ

मुद्रक : विश्वविद्यालय मुद्रणालय, पन्तनगर